Review Of Research
ISSN 2249-894X

Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume - 5 | Issue - 2 | Nov - 2015

गद्य - साहित्य में बच्चन की विचारुनुभूति और अभिव्यक्ति

यू.बी. देशमुख
हिन्दी विभागाध्यक्ष, आबासाहेब पारवेकर महाविद्यालय, यवतमाळ.

प्रस्तावना:

जीवन के सभीं, पक्षों को लेकर बच्चन ने कविता लिखी। बच्चनजी ने खुद कुछ नहीं लिखा, पर जीवन की अनुभूतियां जो लिखवाती गई, वे लिखते गये। बच्चन ने काव्य के साथ-साथ गद्य भी लिखा है। यद्यपि बच्चन जी ने गद्य बहुविध नहीं लिखा, पर जितना भी लिखा है, उसमें अपनी सूझ-बूझ का अच्छा परिचय दिया है। उन्होंने आत्मकथा, निबंध, पत्र, संस्मरण आदि लिखे है। गद्य का विकास भी कविता की तरह जीवन यात्रा की गति के अनुरुप ही हुआ है। बच्चन की गद्य शैली में सरलता का तत्व काव्य की तरह ही मिलेगा।

शब्द विशेष :- राष्ट्रिय भावना, सामाजिक विचारधारा, धार्मिक विचारधारा, साहित्यिक विचारधारा, जीवनदर्शन।

राष्ट्रिय भावना :- राष्ट्रीयता के लिए प्रभुत्व भाव अपने देश के प्रति श्रध्दा एवं भक्ति का होता है। राष्ट्रीयता का रुप सभीं काल और सभीं देश में एक जैसा नहीं रह सकता। जाति रक्षा, धर्म रक्षा, राष्ट्र रक्षा की भावना का मूल रुप तो सर्वत्र ही एक जैसा होता है। बच्चन जी की लिखी हुई "माता और मातृभूमि" कहानी जिसमें अफगाणिस्तान के बच्चों का वर्णन है। उस समय हमारे गुलाम देश की जो परिस्थिति थी उसका हाल सिर्फ एक वाक्य में लिखकर बच्चनजी ने अपने देश के प्रति व्यंग्य प्रकट किया है, "अपने गुलाम देश की तरह वहां यह नहीं कहा जाता था, कि बच्चे देश को संकटो में देखकर अपनी आंखों के सामने किताबों के पर्दे खींच लिया करे।" १९२५ की सरस्वती में 'सत्कविदास' के नाम से प्रकाशित हुआ लेख जिसमें उन्होंने लिखा है कि- 'गीत अपनी फसिस्ती प्रवृत्ती के कारण उस समय भी खतरनाक था – सिर्फ दो पंक्तियों को बदल देने से ही झण्डे के इस गीत की फासिस्ती प्रवृत्ती का निराकरण नहीं हो पाया है।' उन्होंने इस राष्ट्रीय झण्डे का जो दूसरा रुप प्रस्तुत किया है वह इस प्रकार है-

अविजित नित्य तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
शान न इसकी जाने पाये
चाहे जान भले ही जाये
सत्य सिध्द कर हम दिखलाये
'सत्यमेव जयते' का नारा
अविजित नित्य तिरंगा प्यारा।

बच्चन राष्ट्र की रक्षा के लिए 'बंदूक और कलम' दोनो का सफल प्रयोग होने में मानते है। बच्चनजी जब पी.एच.डी. करने लंदन गये, उन्हें यह ख्याल आया-"एकबार मैं फिर नवयुवक हो जाता और ऐसे ही आकर केम्ब्रिज में पढता रहता और यहां के वातावरण से जो कुछ भी श्रेष्ठ और सुन्दर होता अपने देश के लिए ले जाता।"

हिन्दी राष्ट्रभाषा के प्रति दृष्टिकोण :-

बच्चनजी को राष्ट्रप्रेम के साथ-साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी से भी लगाव है। भाषा के जरिये ही राष्ट्र की एकता बनी रहेगी। भारत के अस्तित्व को टिकाये रखने के लिए एक भाषा का होना नितान्त आवश्यक है। बच्चनजी हिन्दी के लिए कहते है कि-"हिन्दी ज्ञान का महत्व केवल एक दूसरी भाषा के ज्ञान का महत्व मात्र नहीं है उसके द्वारा आप भारत के एक बहुत बडे समुदाय के साथ अपना सम्बंध स्थापित करते है।

अपने अनुभवों, संवेदनाओं को हम अपनी भाषा में जितनी कुशलता से रख सकते है, उतनी विदेशी भाषा से नहीं।

विदेशी भाषा कितने ही श्रम, साधना से सीखी जाये पर उसमें कुछ सृजनात्मक देना सामर्थ्य के बाहर की बात है।

सरोजिनी नायडू को NIGHTINGLE OF INDIA 'बुलबुले-हिन्द' कहा जाता था, उन्होंने अपनी कवितायें अंग्रेजी में लिखी। इसके बारे में बच्चनजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा-'मुझे इस बात का अफसोस है वह यह है कि सरोजिनी नायडू जैसी प्रतिभा ने अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम अपने देश की भाषा को क्यों नहीं चुना। यदि उन्होंने ऐसा किया होता तो उनकी प्रतिभा का अधिक विकास ही न होता, देश की साहित्यिक सम्पत्ति की वृध्दि होती और उनकी वाणी इस देश के अधिक लोगो के लिए प्रेरणादायक सिध्द होती। जहां तक मुझे मालूम है, अंग्रेजी काव्य-साहित्य के इतिहास में शायद कहीं उनका नामोल्लेख नहीं।''

नारी के प्रति बच्चन का दृष्टिकोण :-

वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य तक नारी के रुप-वैभव, भाव-भंगिमाओं तथा अपार शक्ती का वर्णन होता आया है। नारी ने कभीं सुजाता बनकर, कभी माता बनकर, कभीं प्रियतमा बनकर और पुत्री के रुप में प्रेरणा के पियूष पिलाये है। बच्चन जी की रचनाओं में नारी के प्रति सहज आकर्षण, सूक्ष्म श्रध्दा, आभार और समादर समर्पण की भावना प्रबल रही है। नायक-नायिका के बाह्य सौंदर्य से अभिभूत होता है। बच्चन का प्रथम प्रणय चम्पा से हुआ उसकी ओर भी प्रथम खिंचाव बाह्य सौंदर्य का ही रहा। श्यामा का बाहरी भोला चौदह वर्षीय सौंदर्य बच्चन को गुलाब की कली सा नवल-कलिका सा लगा। जो उनके लिए शेलीकी 'स्काई-लार्क' बन गई। आइरिस का सौंदर्य भी उन्हें प्रथम दृष्टि में भा गया था। इसी तरह तेजी के प्रति भी प्रथम प्रेम का कारण बाह्य सौंदर्य ही रहा।

मध्ययुगीन अंधकार से निकलकर सुधारवादी युग में संघर्ष करती हुई आधुनिक समय की नारी फिर पुरुष की समकक्षी बनकर उभरी है। मानसिक धरातल पर, मानवी होने के कारण, वह पुरुष से निम्न स्तर पर कभीं नहीं रही। इस प्रकार बच्चन ने नारी के प्रति अपनी अनुभूति से जो सच्चाई लगी उसका वर्णन किया है। उनके जीवन-सृजन की प्रेरक शक्ति नारी ही रही है। जिस नारी समाज के प्रति बच्चन को ममता है, स्नेह है, प्यार है, उसी नारी समाज की किसी एक नारी को बच्चन से आज तक शिकायत है कि उसके जीवन को ट्रेजेडी बना देने में बच्चन का हाथ है। क्योंकि उस नारी को बच्चन के प्रति जो प्यार था उसे देखने के लिए बच्चन की आंखे अंधी थी, उस दिल की आवाज सुनने के लिए उनके कान बहरे थे। उस नारी को कविता सुनाने के लिए वे गूंगे थे। बच्चन के गद्य में खास करके आत्मकथा के तीनों भागों, पत्रों में, प्रवास की डायरी में नारी चरित्र और उसका व्यावहारिक पक्ष जितना उजागर हुआ है उतना काव्य में नहीं।

सामाजिक विचारधारा :-

मुस्लिम शासनकाल में ही भारत की सामाजिक स्थिति भयावह हो गई थी। समाज में अनेक मत-मतान्तर, अनेक कुप्रथाये प्रचलित थी। अंग्रेजी शासनकाल में भी कुरिवाजों ने अपना रुख नहीं बदला। बाल-विवाह, बेमेल-विवाह, दहेज-प्रथा आदि को दूर करने के लिए राजाराम मोहनराय जैसे समाज सुधारक का आर्विभाव हुआ।

ब्रम्ह समाज, प्रार्थना -समाज, आर्य-समाज जैसी संस्थाओं की स्थापना हुई। स्वामी दयानंद ने हिंदू-धर्म और हिंदु-संस्कृति की पुर्नस्थापना करने के लिए जो काम किया वह इतिहास में बेजोड है। बच्चनजी पर भी समसामायिक परिस्थिती की गहरी छाप पडी, जो उनकी रचनाओं में देखी जा सकती है।

विवाह सम्बन्धी दृष्टिकोण :-

समाज में पहले माता-पिता की इच्छानुसार विवाह होते थे, नारी-पुरुष को स्वातंत्र्य अपनी पसंद का तक नहीं था। बच्चनजी इसका विरोध करते हुए अपनी कहानी-'हृदय की आंखे' में अपना मत व्यक्त करते है, कि-मैं हिन्दू-विवाह को अन्यायपूर्ण रीति समझता था। वह एक अटूट बन्धन है, मृत्युपर्यन्त का सम्बन्ध है, मुसलमानों में तलाक की प्रथा है, ईसाईयों में विवाह विच्छेद होते है, पर उन्हें स्वतन्त्रता है कि वे अपनी भावी पत्नी को विवाह से पूर्व देखे, बातचीत करलें, पसंद करलें। उचित तो यह था कि हिन्दु समाज इससे भी स्वतन्त्रता भावी पति-पत्नी को एक-दूसरे से संतुष्ट होने को देता, परंतु यहां तो पत्नी का नाम तक पूछना बेशरमी और बेहचाई समझी जाती है।

पाखंडपूर्ण रीति रिवाज :-

हिंदु समाज में परिवार के सदस्य की मृत्यु के बाद कई विधियां करनी पडती है। आज भी यह विधियां हमारे समाज में है। वे इन विधियों का विरोध करते थे। हम अब भी मध्ययुगीन समाज में रहते चले आ रहे है। समाज इस प्रकार संगठित है कि वह अपवादों को लेकर नहीं चलता। सबके लिए एक ही नमूने की जिंदगी है। अगर वह उस लीक को तोडने का प्रयास करता है तो समाज उसे दंड देता है। समाज व्यक्तियों का बना हुआ है समाज में रहने के अलग तौर-तरीके होते है। बच्चन का विचार हैं कि यदि समाज को सुगठित तथा सुचारु बनाना है तो सभ्यता के उत्तरोत्तर विकास में जड रुढियों से अधिक महत्व जीवित मनुष्य को दिया जाना चाहिये।

परिवर्तन की आवश्यकता है, पर आमूल परिवर्तन की, और ऐसा कभी होता नहीं। क्योंकि इसका मूल जातिगत समाज की रचना है। प्रजातंत्र में प्रत्येक व्यक्ति एक स्वतंत्र इकाई माना जाता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अवसर मिलना चाहिये। व्यक्ति का हित फिर औरो के लिए स्वार्थ ना बन जाये, इसके संदर्भ में बच्चन जी का मत है कि हमने आदर्श बनाया है समाजवादी समाज का। हमारा आदर्श है कि हम समाजवादी समाज की स्थापना करेंगे, परन्तु प्रजातंत्र के तरीकों से। और यह कठिन काम है।

धार्मिक विचारधारा :-

भारत विविध धार्मिक संप्रदायों का देश है। बच्चनजी स्वयं सनातनी परिवार के होने के बावजूद उनपर उसका गहरा असर नहीं था। ''प्रारंभिक रचनायें भाग तीन'', ''ठाकुर जी की कहानी'' में आर्य समाज की विचारधारा का प्रभाव दिखाई देता है। बच्चनजी के घर में 'रामायण' का पाठ हमेशा होता था, जिससे उनपर धार्मिक संस्कार हुए थे। परंतु वे बाह्यडंबर को गलत मानते थे। बच्चनजी धर्म को छद्मावरण मानते है, जिस तरह आधुनिकता का छदमावरण होता है पुराना मजबुती से चिपका है कि हम आधुनिक बनने की ललक में हम सफल नहीं हो जाते। बच्चन भीतरी तत्व को महत्व देते है उन्हें नास्तिक भी नहीं कह सकते। उनको जो लगा, जो अनुभूति हुई, उसे निर्भीकता से कहा। अभय से आई नास्तिकता ही वास्तव आस्तिकता है। उससे आत्मा तो निश्चित ही बलवान होती है। जहां अभय है, वहां धर्म का द्वार है। वे साहसी है, इसलिए धार्मिक है। वे गीता के प्रेमी और रामायण का अखण्ड पाठ करनेवाले है।

साहित्यिक विचारधारा :-

लेखक समाज की उपज होता है। समाज के बदलने, सुधारने या बिगडने के साथ लेखक की मानसिक भावनाएं बनती-बिगडती है। उन्होंने कहा है कि – 'अर्थ व्यवस्थाएं बदलती है तो समाज बदलता है, चिन्तन और अनुभव की प्रक्रियाएं बदलती है, साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ बदलती है।' समाज या समूह कितना ही बदले, नया रुप ले, सम्पन्न, सशक्त, संस्कृत, क्रांतिकारी या शांतिकामी, संतुष्ट या असंतुष्ट बनें, रचना या सर्जन व्यक्ति ही करता है, वह व्यक्ति का ही विशेषाधिकार है।

साहित्य को समझने के लिए भाषा का ज्ञान होना जरुरी है। भाषा का ज्ञान यह प्रारंभिक सीढी है। साहित्य मानव-जीवन में सुख और शांति की भावना भरता आया है। जो साहित्य मानव जीवन और समाज का उन्नायक होता है - वही अमर होता है जैसे 'रामचरित मानस' जिसने कितनों को जीवन में सान्त्वना दी है। बच्चन के मतानुसार साहित्य का सबसे बडा गुण है जीवंतता। उसे जीना चाहिये, अपने बल पर जीना चाहिये। जो समय में नहीं ठहरता, वह दुर्बल था, निष्प्राण था। साहित्यकार का सम्बन्ध समाज से ही स्थापित होकर पूर्ण नहीं होता। क्योंकि दोनों में थोडासा अंतर रहता है। साहित्यकार सिर्फ वर्तमान से ही जुडा नहीं रहता पर अतीत और भविष्य की ओर भी नजर फेकता है। इसलिए साहित्य में ऐसा विशिष्ट वर्णन होना चाहिये, जिसमें सिर्फ जीवन ही नहीं, जीवन की अपूर्ण कामनाएं, सपने, वासनाएं होती है। साहित्य जीवन की इन्ही अपूर्णताओं को पूर्ण करता है। बच्चनजी ने आगे कहा है ''दुनिया के साहित्य का इतिहास देखें तो स्वप्न और सत्य, दोनों से उच्चकोटि का काव्य लिखा गया है। आकाश की तरफ भी देखकर और धरती की तरफ भी देखकर। आकाशी उडान और धरती उडान दोनों अतिशयताएं है। आदर्श स्थिति यह है कि गडा रहे जमीन में, उठा रहे असमान में छरहरे या मीनार के समान।''

जीवन दर्शन :-

दर्शन का लक्ष्य है अपने-अपने दृष्टिकोण से आत्मा का यथार्थ ज्ञान करके साक्षात अनुभव प्राप्त करना। बच्चन का दर्शन है शुध्द जीवन दर्शन। वे आत्मा परमात्मा या मोक्ष की बडी-बडी बाते नहीं करते। उनका दर्शन मानवता के प्रति आस्थावान है। मानवता की उपेक्षा करके कोई भी 'दर्शन' स्थापित नहीं हो सकता। जीवित जागृत मनुष्य के विचार, भावों के आदान-प्रदान से अधिक आवश्यक कार्य जीवन में वे दूसरा नहीं मानते। वे लिखते है कि –''मुझे मेरे जीवन के किसी पहलू से एकाकार करके जो मेरा-जीवन-दर्शन जानना चाहेंगे वे भूल करेंगे। चाहे जो परिस्थितियां और परिणाम हो, मेरा जीवन उद्देश है, जीना और सृजन करना, तथा दूसरो को जीने और सृजन करने में, हो सके तो, सहायता देना।'' बच्चन जी का मानना है कि स्वयं के प्रति जो जागता है वह जीवन के एक बिलकुल दूसरे ही अनुभव को उपलब्ध होता है। उसके हाथ खाली नहीं रहते। उसके प्राण खाली नहीं रहते। उसका समग्र जीवन ही एक अनूठी सम्पदा से भर जाता है। मनुष्य जो भीतर से है, वह बाहर से नहीं दिखता। मनुष्य जो है उसे बांटने को असमर्थ है। स्वयं को बांटे बिना जिया ही नहीं जाता। बच्चनजी का मत है कि ''मनुष्य जो भीतर से होता है बाहर से उसके विपरित अपने को दिखाने का प्रयत्न करता है, कायर अपने को बहादूर सिध्द करना चाहता है, कामी अपने को विरागी, भाव-भीगा अपने को तर्क-शुष्क, लेकिन अपनी आरोपित सतर्कता से वह चूका कि अपने असली रुप में प्रकट हो जाता है। शायद अन्त में मनुष्य को अपना स्वभाव स्वीकार करने और उसका यकिंचित परिष्कार कर लेने में ही थोडी बहुत शांति मिल जाती है।

निष्कर्ष :-

मृत्यु से जीवन जीने की प्रेरणा लेने के लिए बच्चन कहते है-''मृत्यु के भय में जीवन नहीं जिया जा सकता। पूरी तरह जीना तो जीने का आनन्द अनुभव करते हुए ही संभव है। यह ठीक है कि मृत्यु एक बडा सत्य है। पर है तो वह केवल एक क्षण, और जीवन का एक विस्तार जिसमें इतनी सघनता लिये है कि उसे पूरी तरह जीना शायद मनुष्य के लिए सम्भव न हो। मृत्यु की अनिश्चितता जीवन के हर क्षण को सघनता बनाने की प्रेरणा क्यों ना बनें।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :-

१) बच्चन प्रारंभिक रचनाएं
२) डॉ. राजनाथ शर्मा साहित्यिक निबन्ध
३) डॉ. जीवन प्रकाश जोडी, बच्चन
४) बच्चन –नीड का निर्माण फिर